16

मसीही की तरह सोचना और काम करना[1]

(फिलिप्पियों 4:8, 9)

मसीही जीवन जीने के लिए व्यक्ति की सोच स्पष्ट और काम सही होना आवश्यक है। बिना काम किए सोचने वाले व्यक्ति की तरह है जो अपनी बन्दूक से निशाना लगाता तो है पर कभी घोड़ा नहीं दबाता। बिना सोचे काम करने वाला व्यक्ति ऐसा है जो बिना निशाना लगाए घोड़ा दबा देता है। हमारे इस वचन पाठ में सोचने और काम करने दोनों की बात है:

> निदान, हे भाइयो, जो-जो बातें सत्य हैं, और जो-जो बातें आदरणीय हैं, और जो-जो बातें उचित हैं, और जो-जो बातें पवित्र हैं, और जो-जो बातें सुहावनी हैं, और जो-जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो-जो सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन्हीं पर ध्यान लगाया करो। जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा (आयतें 8, 9)।

मसीह की तरह सोचना (4:8)

आयत 8 का आरम्भ ''निदान'' शब्द के साथ होता है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि पौलुस पत्र की समाप्ति की तैयारी कर रहा था। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि 8 और 9 आयतें, आयत 4 में प्रेरित द्वारा आरम्भ किए गए विकार के अन्तिम अवलोकन हों (कई लेखक क्रम के भाग के रूप में ''अन्त में'' शब्द का इस्तेमाल करते हैं: ''पहले'', ''फिर'' और ''अन्त में।'')[3] अन्त में या ''निदान'' के अगले शब्द विचार पैदा करने वाले हैं। ''निदान, हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरनीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन्हीं पर ध्यान लगाया करो'' (आयत 8)।

सही गुण

टीकाकारों और अनुवादकों को आयत 8 के शब्दों को सही-सही अर्थ समझने में दिक्कत आती है, गुणों की आरिम्भक सूची के सम्बन्ध में सुझाव इस प्रकार है:

- ''सत्य'' (यू: *alethe*) उसका संकेत देता है, जो असली या वास्तविक हो।
- ''आदरणीय'' (यू: *semna*) में ईमानदारी और बातें आ जाती हैं, KJV में ''ईमानदारी'', NIV में ''भला'' और CEV में ''शुद्ध'' है। AB में ''श्रद्धा के योग्य और ... आदरयोग्य और उचित'' है। गेरल्ड हॉथोर्न ने लिखा है कि ''शायद semna का एक शब्द में अनुवाद करना असम्भव है, [पर] इसका मुख्य विचार स्पष्ट है। इसका

अर्थ महान बातें, शानदार बातें, यानी वे बातें हैं, जो मन को साधारण और केवल दिखावटी से उस तक उठा देता है, जो भला और अच्छा और नैतिकता का मूल्य है।''[2]

- ''उचित'' (यू: *dikaia*) से अभिप्राय वह करना है जो सही है, चाहे वह परमेश्वर के लिए हो गया, मनुष्य के लिए।[3] पौलुस द्वारा प्रयुक्त शब्द का अनुवाद ''न्याय संगत'' भी हो सकता है (देखें KJV)।
- ''पवित्र'' (यू: *hagnos*) एक ही मूल शब्द से अनुवाद किया गया है जैसे ''शुद्ध'' के लिए (*hagna* ; देखे NASB)।
- ''सुहावनी'' का अनुवाद मिश्रित यूनानी शब्द *Prosphile* से किया गया है, जो ''प्रेम'' (*phileo*) के लिए शब्द के साथ ''प्रति'' (*pros*) के लिए उपसर्ग को मिलाता है। इससे अभिप्राय वह है जो प्रेम के जवाब को उकसाता है। AB में ''सुन्दर और प्रेम के योग्य'' है। NRSV में ''मनोहर'' है।
- ''मन भावनी'' एक और मिश्रित शब्द (यू: *euphema*) का अनुवाद है, जो ''बात या रिबोट'' (*pheme*) के लिए शब्द के साथ ''भला'' या ''अच्छा'' (*eu*) के लिए पूर्वसर्ग को मिलाता है।[4] KJV में ''जिनकी रिपोर्ट अच्छी हो'' है। इस शब्द का अभिप्राय उससे है, जिसकी ''प्रशंसा की जाती'' हो यानी जो ''आदरयोग्य'' (देखें NCV) ''सराहनीय'' (NRSV) और ''सम्माननीय'' (TEV) हो।

गुणों की इस सूची के बाद दो सर्शत वाक्यांश हैं: ''*जो-जो सद्गुण...*'' (आयत 8ख)। अनुवादित शब्द ''सद्गुण'' (यू.: *arete*) ''गुण'' (देखें KJV) के लिए सामान्य शब्द है और असका अभिप्राय ''नैतिक श्रेष्ठता''[5] है यानी ''वह श्रेष्ठता, जिसे धर्मियों के लिए अपने जीवन और मृत्यु में बनाए रखना आवश्यक है।''[6] ''प्रशंसा की बातें'' के अर्थ वाला यूनानी शब्द *ainos* (नये नियम में ''स्तुति'')।[7] 4:8 में ''यदि'' का इस्तेमाल 2:1 में किया गया है, विचार यह है कि ''यदि कोई सद्गुण है, *जो कि है* –और यदि प्रशंसा की कोई बात है–*जो कि है भी*–जो तुम्हें वैसे ही उत्तर देना चाहिए।''

सही सोच

पौलुस ने किस प्रत्युत्तर की आज्ञा दी? ''जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बाते हैं उन पर ध्यान लगाएं।'' ''ध्यान'' (यू.: *logizesthe*) का अर्थ ''ध्यान से विचार करना'' है। ''उन पर ध्यान लगाया करो'' का अर्थ है ''उन बातों को अपने विचारपूर्वक विचार करने के विषय बना लो।''[8] CJB में है उन ''पर अपने विचारों को केन्द्रित करो'' है। ''बातें'' क्या हैं? जो पौलुस ने अभी अभी बताईं थीं: सत्य, आदरणीय, उचित, पवित्र, सुहावनी, मनभावनी, और प्रशंसा की बातें हैं।

फिर से ''सत्य,'' ''आदरणीय,'' ''उचित,'' और अन्य बातों की परिभाषाओं को फिर से देखें। इनमें काफ़ी बातें मिलती जुलती हैं। आवश्यक बात विशेष शब्दों की संक्षिप्त परिभाषाएं नहीं बल्कि शब्दों के मेल से छोड़ा गया सामान्य प्रभाव है उसकी तुलना में जो घृणित और अपमानजनक है, अच्छा और ऊपर उठाने वाला है। पौलुस की ताड़ना को नकारात्मक बनाने पर इसे इस प्रकार पढ़ा जा सकता है: ''अपना मन उन बातों पर *न* लगाओ जो गलत ... या

अपमानजनक ... या अशुद्ध ... या घृणाजनक ... या बदनाम ... या नैतिक रूप में संदेहास्पद ... या बेकार हों।'' मन स्वभाविक रूप में *किसी बात* पर तो ''लगेगा'' ही। पौलुस ने अपने पाठकों को अपना ध्यान अच्छी बातों पर लगाने का आदेश दिया न कि बुरी बातों पर; सकारात्मक बातों पर न कि नकारात्मक बातों पर; जो बनाता है उस पर न कि उस पर जो बिगाड़ता है।

आधुनिक मनोविज्ञान की दो बड़ी ''खोजें'' यह हैं कि हमारे हमारे विचारों से चलते हैं और हम अपने विचारों को नियन्त्रित कर सकते हैं। इस कारण हर व्यक्ति को एक अर्थ में अपने ही जीवन को वश में रखने की सामर्थ है। वैज्ञानिकों द्वारा इन सच्चाइयों की खोज करने से बहुत पहले वे परमेश्वर के वचन में प्रगट की गई थीं:

> सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है। (नीतिवचन 4:23)
>
> क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है ... (नीतिवचन 23:7)
>
> ... इन बातों पर विचार कर (फिलिप्पियों 4:8; KJV)

अमेरिकन निबन्ध लेखक और कवी राल्फ वाल्डो इमर्शन (1803-82) ने कहा, ''आदमी वही होता है जो दिन भर सोचता है।''[9] किसी और ने कहा है: ''आत्मा अपनी सोच में रंगी जाती है।''

अब कोई विरोध कर रहा है, ''परन्तु मैं अपने विचारों को *नियन्त्रित* नहीं कर सकता। समय समय पर मेरे मन में बुरे विचार आ जाते हैं और मैं इसका कुछ नहीं कर सकता।'' अपने चचेरे भाई रिचर्ड डाकस का पहला प्रवचन जो मैंने सुना उसमें,[10] उसे अशुद्ध विचारों पर यह कहना था: ''वे पक्षियों की तरह होते हैं। आप उन्हें अपने सिर के ऊपर उड़ने से रोके, पर आप उन्हें अपने बालों में घोसला बनाने से रोक *सकते* हैं।'' हम सभी में ऐसे विचार होते हैं जो होने नहीं चाहिए। सवाल यह नहीं है कि ''क्या वे हम में होंगे? बल्कि यह है कि क्या हम उन पर *ध्यान* लगाएं?'' मुझे कई बार नकारात्मक विचारों को रोककर कहकर अपने आपको समझाना पड़ता है: ''रोककर, अपना दिमाग किसी और बात पर लाएं!'' क्या यह आसान है? नहीं ... परन्तु किया जा सकता है।

एक सुझाव है जिससे हमें सहायता मिल सकती है: फिलिप्पियों 4:8 को गत्ते पर लिख लें तो इसको अपने साथ रखें। जब आपके मन में विनाशकारी विचार आ रहे हों तो इस गत्ते को पढ़ें। अपने आपको पूछें, ''क्या कोई ऐसी बात है जो सत्य, आदरणीय, उचित पवित्र, सुहावनी, मन भावनी या प्रशंसा की हो और मैं उस पर प्रचार कर सकूं?'' जितना अधिक आप करेंगे उतना ही आपको विचारों को नियन्त्रण में रखना आसान होगा।

मसीही व्यक्ति की तरह काम करें (4:9क)

पौलुस ने चाहा कि उसके पाठक सुधार की बातें पर मन लगाए रखें? वह केवल मानसिक व्यायाम की सिफ़ारिश नहीं कर रहा था; बल्कि उसे मालूम था कि उन विचारों से उनके कार्यों को आकार मिलेगा। मसीही लोगों की तरह सोचना ही काफ़ी नहीं था, हमें मसीही लोगों की तरह

काम भी करना आवश्यक है। मूल धर्मशास्त्र आयत 9 के आरम्भ में ''और'' (*kai*) है हिन्दी और NASB के अनुवाद में नहीं है। यह ''और'' आयत 9 को आयत 8 के साथ नज़दीकी से जोड़ देता है। पौलुस आयत 9 में अपने विचार को आगे बड़ा रहा था: ''जो बातें तुम ने मुझ से सीखें, और ग्रहण की, सुनी और मुझ में देखी उन्हीं का पालन किया करो।'' यानी एक अर्थ में पौलुस ने कहा, यदि अभी भी तुम्हें पता नहीं चला कि सत्य, आदरणीय, उचित और ऐसी बातों का क्या अर्थ है, तो मेरे नमूने को याद रखो कि जैसा मैंने सिखाया वैसा ही मेरा जीवन होगा। इन्हीं बातों पर विचार किया करो और उन्हें किया *करो।*

सही शिक्षा

आयत 9 में पौलुस ने पहले तो फिलिप्पियों की आत्मिक पूर्ण शिक्षा के चार पहलुओं को छुआ:

- उन्होंने पौलुस को शिक्षा देते और प्रचार करते सुना था। प्रेरित अपने पाठकों को ''जो-जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने ... से न झिझका'' यानी उसने परमेश्वर के सारे अभिप्राय'' को बता दिया (प्रेरितों 20:20, 27)।
- उन्होंने परमेश्वर के वचन को ''सीखा'' था और उन्हें उसके द्वारा सिखाई गई बातों की समझ थी और उन्हें वे बातें याद थीं।
- उन्होंने उन नियमों को अपने जीवन में दिखाने के कारण पौलुस के नमूने को ''देखा'' भी था। फिरीसियों के उलट (मत्ती 23:3) वे कहता ही नहीं बल्कि करता भी था। उपयुक्त नमूना देने जैसी समझाने जैसी कोई बात नहीं (देखें 1 तीमुथियुस 4:12; तीतुस 2:7)।
- सबसे महत्वपूर्ण यह तथ्य था कि उन्होंने उसे ग्रहण किया था जो पौलुस ने कहा था।[11] यूनानी में ग्रहण शब्द मिश्रित शब्द (*paralambano*) से दिया गया है जो ''के साथ'' (*para*) के लिए पूर्वसर्ग के साथ ''ग्रहण'' (*lambano*) के लिए शब्द का उपसर्ग है। इसका अर्थ ''के साथ ग्रहण करना'' है यानी अन्य शब्दों में अपने लिए ग्रहण करना है। फिलिप्पियों के लिए पौलुस की शिक्षा को सुनना, सीखना और देखना आवश्यक था; परन्तु उनके लिए उस शिक्षा को *ग्रहण* करना यानी अनन्त सच्चाइयों को अपनी मानना और भी आवश्यक है।

सही प्रशिक्षण

फिलिप्पियों के उन बातों को सीखने और ग्रहण करने की बात करने के बाद जो उसने सीखाई थी, पौलुस ने कहा, ''उन्हीं का पालन किया करो'' (आयत 9ख)। मूल भाषा में ''पालन'' *prasso* का एक रूप है। ''पौलुस की पत्रियों में आम तौर पर ... *prasso* आदत को दर्शाता है ... [यह किसी विशेष प्राप्ति की ओर बढ़ने की प्रक्रिया पर ज़ोर देता है।]''[12] यह शब्द किसी कार्य के स्वभाविक बनने पर उसे दोहराते रहने का सुझाव देता है। इसे करना,-के साथ के रूप में विचार करें।

हम यूनानी शब्द की तुलना अंग्रेज़ी शब्द ''प्रैक्टिस'' की एक परिभाषा मिलती है: ''दक्षिता

पाने के लिए बार बार करना।'' अमल करने से बचना आम तौर पर योग्यताओं को सीमित कर देता है। कुछ लोग खेलों में श्रेष्ठता पाना चाहते होंगे पर प्रैक्टिस उन्हें पसन्द नहीं है। गायकों या संगीतकारों की तरह करना चाहेंगे पर उन्हें प्रेक्टिस करना पसन्द नहीं है। (एक मनोरंजन करने वाले और उसकी पत्नी के साथ साक्षात्कार में उसकी पत्नी ने मुझे बताया, ''उसे उसकी केवल एक कमी है कि उसे 'p' शब्द से नफ़रत है।'' जब मैंने परेशान होकर देखा तो उसने मुझे बताया, ''उसे प्रेक्टिस यानी अभ्यास पसन्द नहीं है।'') ऐसे ही कई लोग ''प्रेक्टिस'' के द्वारा मसीही जीवन के ''कौशल'' बढ़ाने को तैयार नहीं हैं।

सारांश (4:9ख)

आयत 9 पौलुस शान्ति के विषय पर लौट आया: ''तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।'' यह पौलुस का पसन्दीदा आशीष वचन था (देखें रोमियों 15:33; 2 कुरिन्थियों 13:11; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23; 2 थिस्सलुनीकियों 3:16)। फिर ''तब'' शब्द को नज़रअन्दाज़ न करें। एक अर्थ में प्रेरित कह रहा था, ''*यदि* तुम वैसे सोचते हो जैसे तुम्हें सोचना चाहिए *और* वैसे जीवन बिताते हो जैसे तुम्हें बिताना चाहिए, *तो* शान्तिदाता परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।''

आयत 7 में पौलुस ने ''परमेश्वर की शान्ति'' यानी उस शान्ति की बात की जो परमेश्वर, और केवल परमेश्वर दे सकता है। अब उसने शब्दों को पलट दिया: ''शान्ति का परमेश्वर'' कहकर शब्दों को पलट दिया। अन्य शब्दों में जो शान्ति का सोता है। इस आयत में पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखते हैं।'' किसी नागरिक के सुरक्षित नगर में सुरक्षित रहने की कल्पना करें। आयत 9 उस दृश्य में एक विवरण जोड़ देती है: ''नागरिक के पास उसका सुरक्षा करने वाला है: और तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे पास रहेगा!''

क्या आप ''परमेश्वर की शान्ति'' और ''शान्ति'' नहीं चाहते हैं? यदि चाहते हैं तो जैसा इस अध्ययन में कहा गया था आपकी सोच साफ़ होनी और आपका मन शुद्ध होना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]यह शीर्षक डेविड जॉर्ज , *''प्रीचिंग ऑन फिलिपियंस,'' साउथवेस्ट जरनल ऑफ थियोलॉजी 23* (फॉल 1980): 48 से लिया गया था। [2]गरेल्ड एफ. होथॉर्न, *वर्ल्ड बिब्लिकल कमैंट्री ,* अंक 43, *फिलिपियंस,* संपा. डेविड ए. हबर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 188. [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एक्सपेंडिड वाइन'स एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन ऑर कोहेल्नबर्गर इलिनोइस (मिनियापोलिस: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 613. [4]वही, 953. [5]वही, 1201-02. [6]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रैडरिच, अनु., ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, ABR (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 77-78. [7]वाइन, 870. [8]

वही, 1139. [9]थॉमस ए. हैरिस, *आई एम ओके–यू आर ओके* (न्यू यॉर्क: हार्पर एंड रो, 1969), 264 से लिया गया। [10]साउथ बर्नस, ओक्लाहोमा, चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, 2 सितंबर 1945 को दिया गया प्रवचन रिचर्ड डैकस, ''वाच।''

[11]अनुवादित शब्द ''ग्रहण किया परम्परा को ग्रहण करने के लिए तकनीकी शब्द'' है (पैट एडविन हैरेल, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू दि फिलिप्पियंस,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, संपा. एवरेट फर्ग्यूसन [ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969], 141)। (देखें मरकुस 7:4.) फिलिप्पियों 4:9 में ''बातें'' मनुष्यों की परम्परा को नहीं कहा गया (देखें मरकुस 7:8; कुलुस्सियों 2:8) परन्तु पौलुस जैसे परमेश्वर की प्रेरणा पाए वक्ताओं और लेखकों के द्वारा परमेश्वर की ओर से मिली ''परम्परा'' को कहा गया (देखें 1 कुरिन्थियों 11:2; 2 थिस्सलुनीकियों 2:15; 3:6)। [12]वाइन, 322.